

शल्य तन्त्र विभाग (Department of Shalya Tantra)

फैकल्टी प्रोफाइल (संकाय विवरण):

1. डॉ. शक्ति सिंह, सह-प्राध्यापक (एसोसिएट प्रोफेसर)
2. डॉ. विनय कुमार पांडेय, सहायक प्राध्यापक (असिस्टेंट प्रोफेसर)
3. डॉ. नीलेश निगम, सहायक प्राध्यापक (असिस्टेंट प्रोफेसर)

1. परिचय (Introduction)

श्री राम चंद्र वैद्य आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (SRVAMCH) में शल्य तन्त्र विभाग आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सा के व्यापक अध्ययन, शिक्षण एवं नैदानिक अभ्यास हेतु समर्पित एक उत्कृष्ट शैक्षणिक एवं चिकित्सीय केंद्र है। आचार्य सुश्रुत की दिव्य एवं वैज्ञानिक शिक्षाओं पर आधारित यह विभाग शास्त्रीय आयुर्वेदिक शल्य ज्ञान को आधुनिक सर्जिकल विज्ञान, समकालीन नैदानिक कौशल तथा उन्नत चिकित्सा तकनीकों के साथ समन्वित रूप से प्रस्तुत करता है। विभाग का उद्देश्य उच्च स्तरीय रोगी सेवा, गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा, नैदानिक दक्षता तथा अनुसंधान उन्मुख शल्य चिकित्सा परंपरा को सुदृढ़ करना है।

2. लक्ष्य (Aims)

1. ऐसे दक्ष, संवेदनशील एवं नैतिक आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सकों का निर्माण करना, जो सामान्य एवं आपातकालीन दोनों प्रकार की शल्य अवस्थाओं का सफलतापूर्वक प्रबंधन कर सकें।
2. क्षार कर्म, अग्निकर्म, रक्तमोक्षण एवं क्षारसूत्र जैसी शास्त्रीय पैरासर्जिकल विधियों में उत्कृष्टता स्थापित करना तथा उन्हें आधुनिक सर्जिकल एवं क्रिटिकल केयर सिद्धांतों के साथ समन्वित करना।
3. समाज को सुलभ, सुरक्षित, उच्च गुणवत्ता युक्त एवं समग्र शल्य चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध कराना।
4. आयुर्वेदिक शल्य विज्ञान को आधुनिक तकनीकी नवाचारों एवं अनुसंधान आधारित चिकित्सा दृष्टिकोण से समृद्ध करना।

3. उद्देश्य (Objectives)

1. NCISM न्यूनतम मानक आवश्यकताओं (MSR) के अनुरूप उत्कृष्ट शैक्षणिक एवं नैदानिक प्रशिक्षण प्रदान करना।
2. आधुनिक सिमुलेशन प्रशिक्षण, उन्नत स्किल लैब तथा अभिनव छात्र परियोजनाओं के माध्यम से व्यावहारिक एवं साइकोमोटर कौशल विकसित करना।
3. छात्रों एवं इंर्न को व्यवस्थित क्लिनिकल डॉक्यूमेंटेशन, वाइटल मॉनिटरिंग तथा क्रिटिकल केयर प्रोटोकॉल में दक्ष बनाना।
4. पारंपरिक आयुर्वेदिक सिद्धांतों को सामान्य, लेप्रोस्कोपिक एवं रोबोटिक सर्जरी की मूलभूत अवधारणाओं के साथ एकीकृत करते हुए साक्ष्य-आधारित शल्य चिकित्सा को प्रोत्साहित करना।
5. अनुसंधान, नैदानिक विवेचना तथा सतत चिकित्सा शिक्षा के माध्यम से अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देना।

4. विभागीय सेवाएँ एवं प्रमुख गतिविधियाँ (Departmental Services & Major Activities)

सामान्य शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएँ (General Surgical Procedures)

1. एपेंडेक्टोमी (Appendectomy): तीव्र एवं जीर्ण एपेंडिसाइटिस का शल्य प्रबंधन।
2. हर्निया रिपेयर (Hernia Repair): वंक्षण, नाभि, उदर एवं इन्सीजनल हर्निया का समग्र शल्य उपचार।
3. कोलेसिस्टेक्टोमी (Cholecystectomy): पित्ताशय संबंधी रोगों एवं पित्ताशय की पथरी का शल्य प्रबंधन।
4. बिनाइन ट्यूमर उच्छेदन (Excision of Benign Lesions): लिपोमा, सिबेसियस सिस्ट, फाइब्रोमा एवं लिम्फ नोड बायोप्सी जैसी लघु शल्य प्रक्रियाएँ।
5. विद्रधि प्रबंधन (Abscess Management): सतही, गहरे एवं पेरिअनल विद्रधियों का भेदन एवं विस्रावण।
6. हाइड्रोसील सर्जरी (Hydrocele Surgery): हाइड्रोसील एवं अंडकोशीय सूजन संबंधी शल्य प्रक्रियाएँ।
7. वूंड डिब्राइडमेंट (Wound Debridement): संक्रमित घावों, डायबिटिक फुट एवं नेक्रोटाइजिंग संक्रमणों का शल्य शोधन।

8. एक्सप्लोरेटरी लेपरोटॉमी एवं एक्यूट एब्डोमेन प्रबंधन: आंत्र रुकावट, छिद्र एवं अन्य शल्य आपात स्थितियों का उपचार।
9. आघात एवं घाव प्रबंधन (Trauma & Wound Care): प्राथमिक मूल्यांकन, सीवन कर्म, घाव स्थिरीकरण एवं आपातकालीन शल्य देखभाल।
10. लेप्रोस्कोपिक एवं मिनिमली इनवेसिव प्रक्रियाएँ: आधुनिक कीहोल सर्जिकल तकनीकों द्वारा चयनित उदर रोगों का उपचार।

शास्त्रीय आयुर्वेदिक एवं विशेष उपचार (Classical Ayurvedic & Specialized Therapies)

1. क्षारसूत्र चिकित्सा द्वारा अर्श, भगंदर एवं परिकर्तिका का विशेषज्ञ उपचार।
2. अग्निकर्म, सिरावेध एवं रक्तमोक्षण द्वारा वेदना एवं मस्कुलोस्केलेटल विकारों का प्रबंधन।
3. दुष्ट व्रण प्रबंधन हेतु शास्त्रीय आयुर्वेदिक व्रण चिकित्सा एवं समग्र घाव देखभाल।
4. शल्योपरान्त रोगी देखभाल में आयुर्वेदिक औषधियों एवं पुनर्वास सिद्धांतों का समावेश।

5. शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ (Academic & Co-Curricular Activities)

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में नियमित शल्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों का आयोजन।
2. इंटर्न एवं विद्यार्थियों हेतु BLS/ACLS आधारित आपातकालीन चिकित्सा एवं सर्जिकल प्रशिक्षण मॉड्यूल।
3. विभागीय स्किल लैब में हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण एवं सर्जिकल सिमुलेशन अभ्यास।
4. नियमित क्लिनिकल केस प्रस्तुतीकरण, शल्य कार्यशालाएँ, सेमिनार एवं सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यक्रम।
5. अनुसंधान, नवाचार एवं आधुनिक तकनीकी समन्वय के माध्यम से आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सा के उन्नयन का सतत प्रयास।





